



गंडमूल शांति की पूरी रिपोर्ट

शांति का विधान, मंत्र-संख्या व अगले 12 महीनों के शुभ दिन

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:01

॥ पारस वाणी ॥

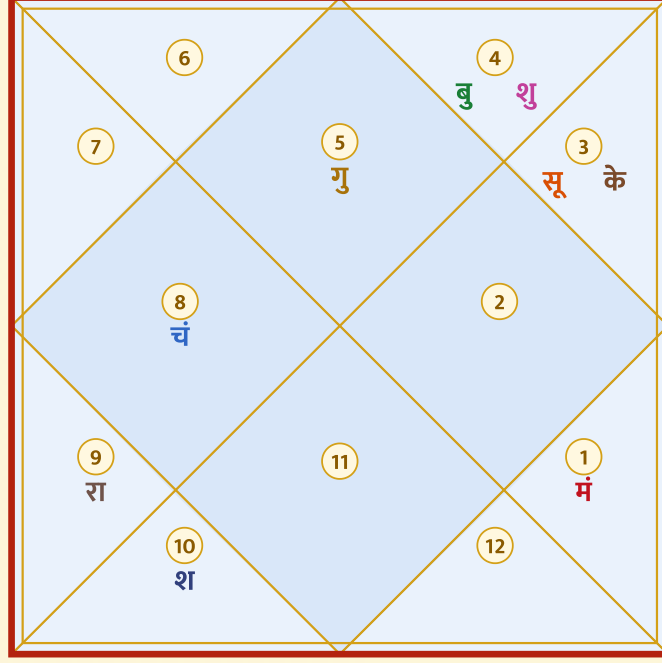
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



आपकी स्थिति — दोष है या नहीं

अ ध्या य 1

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली की गणना एकदम स्पष्ट है — गंडमूल दोष है। आप ज्येष्ठा नक्षत्र के चौथे चरण में जन्मे हैं, और परंपरा में यह चरण स्वयं के लिए विचारणीय माना गया है। पर घबराइए बिल्कुल मत — यह कोई दंड नहीं, एक संकेत है जिसका सरल समाधान शास्त्र में पहले से दिया हुआ है।

ज्येष्ठा नक्षत्र — इसका स्वभाव क्या है?

ज्येष्ठा नक्षत्र वृश्चिक राशि का तीसरा और अंतिम नक्षत्र है। इसके स्वामी **बुध** हैं, और इसका देवता इंद्र — शक्ति, नेतृत्व व अधिकार का प्रतीक। ज्येष्ठा में जन्म लेने वाले प्रायः गहरे स्वभाव के, दृढ़निश्चयी और अपने मार्ग पर चलने वाले होते हैं। यह नक्षत्र वृश्चिक-धनु की संधि से ठीक पहले पड़ता है — और इसीलिए चौथा चरण, जो उस संधि के सबसे निकट है, परंपरा में विशेष ध्यान माँगता है।

चौथा चरण — किसके लिए और क्यों?

गंडमूल की बात में **चरण सबसे महत्वपूर्ण** होता है। ज्येष्ठा के चौथे चरण के बारे में परंपरागत मान्यता है कि यह **स्वयं के लिए** भारी हो सकता है — अर्थात् जातक को जीवन में कभी-कभी अकेलेपन का अनुभव, आत्मविश्वास में उतार-चढ़ाव, या मन की उलझन अधिक हो सकती है। यह "हानि होगी" जैसी भविष्यवाणी नहीं है — यह केवल एक प्रवृत्ति का संकेत है, जिसे शांति व उपाय से संतुलित किया जा सकता है।

आपकी कुंडली में बुध ही इस नक्षत्र के स्वामी हैं, और वे बारहवें भाव में बैठे हैं — जो एकांत, आत्म-मंथन और गहरी सोच का भाव है। इससे उपरोक्त प्रवृत्ति और अधिक स्पष्ट होती है, पर साथ ही यह भी कहती है कि आपके भीतर असाधारण मानसिक गहराई है।

शांति का विधान — देर हुई तो भी कोई बात नहीं

परंपरा में गंडमूल शांति जन्म के 27वें दिन कराई जाती है, जब वही नक्षत्र लौटता है। **यदि वह समय निकल गया हो — और यहाँ 34 वर्ष की आयु में निश्चित रूप से निकल चुका है — तो भी शांति उतनी ही फलदायी होती है।** किसी भी आगामी ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन यह संस्कार करा सकते हैं। देर से कराने से कुछ बिगड़ता नहीं — शास्त्र इस विषय में बहुत उदार है।

मुख्य बातें

- **गंडमूल दोष है** — ज्येष्ठा नक्षत्र, चौथा चरण, स्वयं के लिए विचारणीय
- नक्षत्र-स्वामी **बुध** हैं; इनका मंत्र-जप और इनसे जुड़ी वस्तुओं का दान सबसे उपयुक्त उपाय है
- शांति किसी भी आगामी ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन हो सकती है — **देर से भी पूर्ण फल मिलता है**
- यह दोष भाग्य या परिवार पर "श्राप" नहीं, एक विशेष ऊर्जा-संतुलन का संकेत है
- **डरने की कोई बात नहीं** — समझदारी से उपाय करें और निश्चित रहें

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

एवं त्वरिष्टे सम्प्राप्ते नरः शान्तिं करोति यः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति चिरजीवी सुखी च सः ॥

जब कोई अरिष्ट सामने आए और मनुष्य विधिपूर्वक शान्ति कर ले — तो उसकी सारी इच्छाएँ पूरी होती हैं, वह दीर्घायु और सुखी रहता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ९६



इस नक्षत्र-चरण का अर्थ

अ ध्या य 2

ज्येष्ठा का चौथा चरण — स्वयं के लिए विचारणीय, पर भीतर की शक्ति असाधारण

अभय शर्मा जी, आप ज्येष्ठा नक्षत्र के चौथे चरण में जन्मे हैं — यह चरण वृश्चिक-धनु की संधि पर पड़ता है, और परंपरा में इसे स्वयं के लिए विचारणीय माना गया है। इसका अर्थ यह नहीं कि जीवन कठिन रहेगा — बल्कि यह कि इस चरण का व्यक्ति अपनी राह स्वयं बनाता है, और यह राह बनाने में थोड़ा अधिक समय व श्रम लगता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र का स्वभाव

ज्येष्ठा का शाब्दिक अर्थ है — *सबसे बड़ा, सबसे वरिष्ठा*। इस नक्षत्र के स्वामी बुध हैं और देवता इंद्र। इंद्र वह हैं जो संघर्ष करके अपना सिंहासन बचाते हैं — इसलिए ज्येष्ठा के व्यक्ति में **नेतृत्व की स्वाभाविक भूख** होती है, पर यह नेतृत्व सहज नहीं मिलता — इसे अर्जित करना पड़ता है।

आपकी कुंडली में बुध (नक्षत्र-स्वामी) बारहवें भाव में हैं — एकांत, गहन चिंतन और भीतरी संसार का भाव। इसका अर्थ यह है कि **आपकी बुद्धि बाहर से अधिक भीतर काम करती है** — आप जो सोचते हैं वह ऊपर-ऊपर नहीं दिखता, पर होता गहरा है। यह शक्ति है, पर इसे पहचानने में समय लगता है।

चौथा चरण — "स्वयं के लिए विचारणीय" का असली अर्थ

परंपरा में यह चरण *स्वयं के लिए भारी* कहा गया है — इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि इस चरण में जन्मा व्यक्ति **अपनी शक्ति को देर से पहचानता है**। जीवन के पहले दो-तीन दशक प्रायः आत्म-संशय, खोज और परीक्षाओं में बीतते हैं। आप अभी 34 वर्ष के हैं — यह वह उम्र है जब ज्येष्ठा-चतुर्थ-चरण का व्यक्ति **अपनी असली ज़मीन पर खड़ा होना शुरू करता है**।

यह कोई संयोग नहीं। शनि महादशा के अंत और सूर्य महादशा के आरंभ के बीच जो छनाई हुई, वह इसी चरण की प्रकृति का हिस्सा थी — जो टिकाऊ था, वह बचा; जो ऊपरी था, वह छूट गया।

नक्षत्र-स्वामी बुध और आपका भीतरी संसार

बुध बारहवें भाव में शत्रु राशि (कर्क) में हैं — इसका अर्थ है कि **आपकी वाणी और विचार प्रायः मन के भीतर ही रहते हैं, बाहर कम आते हैं**। आप जो महसूस करते हैं वह पूरा कह नहीं पाते, या कह देते हैं तो लगता है समझा नहीं गया। यह ज्येष्ठा-चतुर्थ के व्यक्ति की सबसे बड़ी चुनौती है — **अपनी भाषा खोजना**।

पर गुरु लग्न में हैं — यह इस चुनौती का सबसे बड़ा उत्तर है। जब आप बोलते हैं, तो उसमें भार होता है। लोग सुनते हैं। जितना बुध ने मन में रोका, गुरु ने उसे गहरा बनाया।

इस चरण की असाधारण शक्ति

ज्येष्ठा का चौथा चरण कठिन ज़रूर है, पर **जो इस चरण में जन्मे हैं वे अकेले खड़े होना जानते हैं**। जब सब साथ छोड़ दें, तब भी ये टिके रहते हैं। मंगल नवम भाव में स्वराशि में हैं — यह भाग्य और साहस का बल है। आपके भीतर एक ऐसी जिद है जो टूटती नहीं, बस कभी-कभी थक जाती है।

मुख्य बातें

- **ज्येष्ठा नक्षत्र नेतृत्व का नक्षत्र है** — यह सम्मान संघर्ष से मिलता है, सहज नहीं
- **चौथा चरण स्वयं के लिए विचारणीय है** — अर्थात् आत्म-पहचान में समय लगता है; 34 की उम्र इस यात्रा का असली आरंभ है
- **बुध बारहवें भाव में** — भीतरी बुद्धि गहरी है, पर उसे बाहर लाने का अभ्यास ज़रूरी है
- **गुरु लग्न में** — जब बोलते हैं तो असर होता है; यही इस नक्षत्र-चरण का सबसे बड़ा वरदान है
- **मंगल स्वराशि में नवम भाव में** — साहस और भाग्य दोनों आपके पक्ष में हैं; बस धैर्य से चलना है



शांति का विधान — क्या, कैसे, किसके हाथों

अ ध्या य 3

शांति का विधान इतना जटिल नहीं जितना लोग सोचते हैं — और इतना हल्का भी नहीं कि बिना ध्यान दिए छोड़ दिया जाए। **ज्येष्ठा के चौथे चरण की शांति सरल, सुलभ और घर पर भी संभव है।** बस विधि सही हो, दिन सही हो, और मन में श्रद्धा हो।

क्या होता है इस शांति में?

गंडमूल शांति का मूल भाव यह है कि जन्म के समय जो नक्षत्र-ऊर्जा थी, उसे एक बार फिर उसी नक्षत्र के दिन जाग्रत करके **संतुलित किया जाए।** ज्येष्ठा नक्षत्र के स्वामी **बुध** हैं — बुद्धि, वाणी और विवेक के ग्रह। आपकी कुंडली में बुध बारहवें भाव में हैं, शत्रु राशि में — इसलिए इस शांति का उद्देश्य केवल रस्म नहीं, बल्कि बुध को बल देना भी है, जो आपके एकादश भाव के भी स्वामी हैं।

शांति में मुख्यतः तीन काम होते हैं:

- **बुध मंत्र का जाप** — ॐ बुं बुधाय नमः, कम से कम 108 बार, उसी दिन प्रातःकाल
- **हवन** — बुध की समिधा (अपामार्ग या दूर्वा) से, ब्राह्मण से या स्वयं भी सरल विधि से हो सकता है
- **दान** — हरी वस्तुएँ (मूँग, हरा कपड़ा, कांसे का बर्तन) किसी विद्यार्थी या जरूरतमंद को

कब करें — शुभ दिनों की सूची

शांति उसी दिन होती है जब **ज्येष्ठा नक्षत्र** आकाश में हो — यही परंपरा का विधान है। आपके लिए शुद्ध गणना से निकाले गए दिन ये हैं:

18 सितम्बर 2026 • 15 अक्तूबर 2026 • 11 नवम्बर 2026 • 9 दिसम्बर 2026 • 5 जनवरी 2027 • 1 फ़रवरी 2027 • 1 मार्च 2027 • 28 मार्च 2027 • 24 अप्रैल 2027 • 22 मई 2027 • 18 जून 2027 • 15 जुलाई 2027

इनमें से **सबसे निकट का दिन 18 सितम्बर 2026** है — यानी अब से बस चार दिन बाद। यदि इस बार संभव हो तो यही उत्तम है। न हो सके तो अगले किसी भी दिन — **देर हो जाने से कुछ बिगड़ता नहीं।** हर अगला ज्येष्ठा नक्षत्र उतना ही उपयुक्त है।

किसके हाथों — कौन करे यह शांति?

यह शांति **किसी जानकार पंडित से करवाई जाए तो उत्तम है**, पर यदि वह सुविधा न हो तो घर में भी सरल विधि से हो सकती है। इसके लिए काशी या किसी बड़े तीर्थ जाने की आवश्यकता नहीं।

यदि पंडित से करवाएँ: किसी स्थानीय मंदिर के पुजारी को बता दीजिए कि ज्येष्ठा नक्षत्र की गंडमूल शांति करनी है। वे विधि जानते हैं। साथ में यह भी बता दें कि नक्षत्र-स्वामी बुध हैं — इससे वे सही सामग्री तैयार कर लेंगे।

यदि स्वयं करें: प्रातःकाल स्नान के बाद, शांत मन से बैठकर बुध के मंत्र का 108 बार जाप करें। एक दीया जलाएँ, हरी वस्तु का दान करें, और मन में संकल्प लें कि यह जन्म-नक्षत्र की ऊर्जा के सम्मान में किया जा रहा है। **यह श्रद्धा ही असली शांति है।**

एक बात और — आपकी मौजूदा दशा से जोड़

अभी सूर्य महादशा में **शनि की अंतर्दशा** चल रही है, और योगिनी में **भद्रिका** — जिनके स्वामी बुध ही हैं। यह संयोग ध्यान देने योग्य है: जो ग्रह आपके नक्षत्र के स्वामी हैं, **वही योगिनी दशा में भी सक्रिय हैं।** इसका अर्थ यह है कि इस समय बुध से जुड़ा कोई भी कार्य — शांति, मंत्र-जाप, पढ़ना-लिखना, विवेकपूर्ण निर्णय — विशेष रूप से फलदायी रहेगा।

मुख्य बातें

- **शांति का दिन:** ज्येष्ठा नक्षत्र वाला दिन — सबसे निकट **18 सितम्बर 2026**
- **नक्षत्र-स्वामी बुध** का मंत्र-जाप (108 बार) और हरी वस्तुओं का दान — यही मूल विधि है
- पंडित से करवाएँ तो अच्छा, पर **घर में स्वयं भी श्रद्धा से हो सकती है**
- देर हो गई हो तो चिंता नहीं — **अगला ज्येष्ठा नक्षत्र उतना ही शुभ है**
- भद्रिका योगिनी (बुध) और इस शांति का मेल इस समय को **विशेष अनुकूल** बनाता है

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४



कब कराएँ — आगे के शुभ दिन

अ ध्या य 4

अभय शर्मा जी, शांति का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यही है — **सही दिन कौन-सा है?** और आपके लिए यह सूची पहले से गणना से तैयार है, अनुमान से नहीं।

शुभ दिनों की सूची — ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन

परंपरा में गंडमूल शांति उसी नक्षत्र के दिन कराई जाती है जिसमें जन्म हुआ हो — अर्थात् **ज्येष्ठा नक्षत्र का दिन**। चंद्रमा जब-जब ज्येष्ठा नक्षत्र में आते हैं, वह दिन शांति के लिए उपयुक्त होता है। आपके लिए गणना से निकाले गए शुभ दिन ये हैं:

- 18 सितम्बर 2026
- 15 अक्टूबर 2026
- 11 नवम्बर 2026
- 9 दिसम्बर 2026
- 5 जनवरी 2027
- 1 फ़रवरी 2027
- 1 मार्च 2027
- 28 मार्च 2027
- 24 अप्रैल 2027
- 22 मई 2027
- 18 जून 2027
- 15 जुलाई 2027

सबसे पहला और निकटतम अवसर 18 सितम्बर 2026 है — यानी अभी से केवल चार दिन की दूरी पर।

इसी समय क्यों — दशा का संदर्भ

अभी आपकी **सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा** चल रही है, जो फ़रवरी 2027 तक है। शनि आपके छठे और सातवें भाव के स्वामी हैं और मकर राशि में वक्री होकर छठे भाव में बैठे हैं — यह दशा कुछ भार देती है, मन पर एक दबाव बना रहता है। ऐसे समय में शांति कराना — जब भीतर एक बेचैनी हो — और भी अर्थपूर्ण हो जाता है। **शांति केवल विधि नहीं, एक नई शुरुआत की स्वीकृति भी है।**

इसके साथ योगिनी दशा में **भद्रिका** (बुध स्वामी) चल रही है और अंतर में **सिद्धा** (शुक्र) — बुध ही ज्येष्ठा नक्षत्र के स्वामी हैं। यह एक स्वाभाविक संगति है — इस समय बुध से जुड़ी क्रिया (शांति-हवन, मंत्र-जप) और भी उचित बैठती है।

कौन-सा दिन पहले चुनें

यदि परिवार के सदस्य उपलब्ध हों और स्थान की सुविधा हो, तो **18 सितम्बर 2026** सबसे उत्तम है। यह निकटतम है और चंद्रमा का बल

भी उस दिन ठीक-ठाक रहेगा।

यदि इस बार संभव न हो, तो **15 अक्टूबर** या **11 नवम्बर 2026** — दोनों भी पूरी तरह उपयुक्त हैं।

मुख्य बातें

- शुभ दिन वे हैं जब चंद्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में हों — ऊपर दी सूची इसी गणना से है
- **18 सितम्बर 2026** सबसे निकट और उपयुक्त अवसर है
- देर हो गई हो तो चिंता नहीं — **किसी भी अगले ज्येष्ठा-दिन पर शांति उतनी ही फलदायी है**
- **बुध की अंतर-योगिनी और शनि की अंतर्दशा** — दोनों मिलकर इस समय को शांति के लिए स्वाभाविक बना रहे हैं
- जो दिन हो, उस सुबह स्नान कर, शांत मन से बैठें — **विधि सरल हो तो भी मन पूरा लगे, यही असली शांति है**



संतुलित दृष्टि — घबराने की बात नहीं

अ ध्या य 5

अभय शर्मा जी, यह अध्याय इसलिए है क्योंकि गंडमूल सुनते ही मन में एक अनजाना भय आ जाता है — और वह भय ज़रूरी नहीं है। **यह दोष दंड नहीं, एक स्वभाव-संकेत है।**

यह भार कितना असली है?

ज्येष्ठा का चौथा चरण परंपरा में "स्वयं के लिए विचारणीय" माना गया है — पर इसका अर्थ यह नहीं कि जीवन कठिन होगा। इसका अर्थ है कि आप एक ऐसे स्वभाव के साथ जन्मे हैं जो **भीतर से ज़्यादा लड़ता है, बाहर से कम।** संघर्ष अगर है, तो वह खुद से है — किसी और से नहीं।

कुंडली क्या कह रही है?

आपकी कुंडली में गुरु लग्न (भाव 1) में हैं, युवा अवस्था में, भरपूर बल के साथ — और **गजकेसरी योग** भी बन रहा है (चंद्र से केंद्र में गुरु)। यह योग यश, बुद्धि और समाज में सम्मान देता है। जिस कुंडली में लग्न में बलवान गुरु हों, उसमें गंडमूल का भार काफ़ी हल्का हो जाता है — शास्त्र में यही परंपरा है।

साथ ही **हर्ष विपरीत राजयोग** भी है — जो कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति की बात करता है। यानी जो दबाव आपने महसूस किया है, वह आगे की सफलता का आधार बन रहा है।

गुरु की दृष्टि भाव 5, 7 और 9 पर पड़ रही है — संतान, विवाह और भाग्य, तीनों पर एक शुभ ग्रह की नज़र है। यह संरक्षण का संकेत है।

डर कहाँ से आता है?

अधिकतर लोगों को गंडमूल का डर किसी के कहने से आता है, कुंडली से नहीं। किसी ने कह दिया, मन में बैठ गया। **पर गणना यह नहीं कहती कि जीवन बर्बाद होगा** — गणना कहती है कि इस चरण के जन्मे व्यक्ति को अपने भीतर थोड़ा अधिक सँभलकर चलना पड़ता है।

34 वर्ष की आयु तक आप जो जी चुके हैं, वह इस बात का प्रमाण है कि आप सँभल सकते हैं।

मुख्य बातें

- **गंडमूल दोष दंड नहीं, स्वभाव का एक विशेष रंग है** — इसे समझना है, डरना नहीं।
- लग्न में बलवान गुरु और गजकेसरी योग इस दोष के प्रभाव को काफ़ी हल्का करते हैं।
- गुरु की दृष्टि भाव 5, 7 और 9 पर — जीवन के मुख्य क्षेत्रों पर शुभ संरक्षण है।
- हर्ष विपरीत राजयोग कहता है — **कठिनाई के बाद उन्नति आपकी कुंडली में लिखी है।**
- शांति कराना मन को सहारा देती है — करा लीजिए, पर बिना किए भी जीवन आगे चलता है।

△ गंडमूल शांति परंपरागत मान्यता है। यह भविष्यवाणी नहीं — मन की शांति व परिवार की परंपरा निभाने का एक सरल विधान है।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ गंडमूल शांति की पूरी रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।